शोध मंथन Vol. XV No.III July.-Sept. 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

स्वतन्त्र भारत की विदेश नीतिः विश्व पटल पर भारत की बनती पहचान (पुस्तक समीक्षिका)

प्राप्तिः 01.09.2024
स्वीकृतः 120.09.2024

77

वी.पी. दत्त, नरेन्द्र तोमर (अनुवादक),
स्वतन्त्र भारत की विदेश नीति,
नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, 2015,
पृ0—199, ISBN 978—81—237—5643—1, मूल्य—95 / —

डॉ0 (श्रीमती) नीरज
असि0 प्रो0 राजनीति विज्ञान
राजकीय महिला महाविद्यालय, कुरावली,
मैनपुरी।
Email: 0205neeraj@gmail.com

अमुक पुस्तक भारतीय विदेश नीति के सॉगोपांग व्यस्थित विश्लेषणात्मक एक सारगर्भित अध्ययन साम्रगी की उपलब्धता सुनिश्चित करती है। विदेश नीति जैसे दुरूह एवं नीरस विषय को बड़े ही रोचक एवं व्यवस्थित रूप में लेखक द्वारा प्रस्तुत किया गया है। नेहरू युग से लेकर वर्तमान तक विदेश नीति एवं उस पर पडने वाले प्रभावों का विश्लेषणात्मक मूल्यांकन किया गया।

प्रथम अध्याय में लेखक द्वारा स्वतन्त्र भारत की विदेश नीति के शैशवकाल का चित्रण किया गया है। तत्कालीन परिस्थितियों, नीति—निर्माण में नेहरू की एक मात्र प्रभावकारी भूमिका शीतयुद्व एवं उससे उत्पन्न परिस्थितियों में भारतीय विदेश नीति द्वारा गुट—निरपेक्षता का अनुसरण करने को लेकर लेखक ने बड़ा ही सटीक विश्लेषण किया। महाशक्तियों के साथ—साथ निकटता यथा दूरी वहीं अपने पड़ोसियों के साथ कुछ उलझी—सी विदेष नीति दिखाई देती है। कश्मीर के सम्बन्ध में जहाँ भारत शान्तिपूर्ण समाधान हेतु मुद्दें को सुरक्षा परिषद् में ले जाता है और अपनी गुटनिरपेक्ष सोच के कारण सैन्य गुटों से दूरी बनाकर रखता है।

नेहरू का दृष्टिकोण अत्यन्त यथार्थवादी था। वह भारतीय शक्ति एवं दुर्बलताओं से भली—भाँति परिचित थे। मास्को एवं वाशिंगटन से समान दूरी एवं स्वतन्त्र विदेश नीति के अनुसरण से प्रबुद्ध आत्मनिर्भरता का प्रयोग विदेश नीति में किया गया। वैश्विक समस्याओं के प्रति व्यवहारिक, आत्मनिर्भर एवं स्वतन्त्र दृष्टिकोण का परिचालन भारतीय विदेश नीति की समृद्धि को स्पष्ट करता है।

पंचशील सिद्वान्त विश्व समुदाय के समक्ष शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व का एक व्यवहारिक उदाहरण था परन्तु चीन की विस्तारवादी नीति ने भारतीय प्रयासों को झटका दिया। चीन के साथ हमारा सीमा विवाद 1962 में घोषित युद्व में परिवर्तित हो गया। यह वह समय था जब पहली बार विश्व पटल पर दोनों महाशिक्तयाँ किसी विवाद में एक साथ भारत के पक्ष में खड़ी दिखाई दी।

कश्मीर एक ज्वलन्त समस्या थी, जिससे भारतीय विदेश नीति भी इससे अछुती न रही। वाशिंगटन और ब्रिटेन का यह उद्देश्य था कि कश्मीर चीन और सोवियत संघ को नियन्त्रित करने का उपक्रम बन सकें। यह युग वैश्विक सैन्य संधियों का युग था। विश्व सीटो, सेन्टो, वार्सा पैक्ट जैसे अनेक सैन्य गुटों में बॅट चुका था। भारतीय विदेश नीति ने दोनों की अतिवादी सोचों के मध्य गुट–निरपेक्षता रूपी मध्य मार्ग का अनुसरण किया। जिसकी पूर्ण परिनीति बिलग्रेड सम्मेलन में होती है। भारत जानता है कि ''तत्कालीन एशिया का बीमार आद'' चीन भारत के समक्ष पाकिस्तान से बड़ी चुनौती बनेगा। साथ ही तिब्बत का लुप्त होना संघर्ष की चरम सीमा थी। नेहरू ने समस्या के समाधान का शान्ति पूर्ण सहअस्तित्व के रूप में समाधान खोजने का प्रयास किया परन्तु दोनों देश युद्व के मुँहाने पर जा खड़े हुए। नेहरू की इस नीति की आलोचना हुई परन्तु सफलता चीनियों को भी नहीं मिली, क्योंकि उन्हें भी जीते हुए क्षेत्रों को छोड़कर वापस जाना पड़ा था। यह नेहरू की चीन के साथ सम्मानजनक शान्ति की नीति थीं। लेखक के अनुसार इससे बहतर विकल्प तत्य से वर्तमान तक कोई भी नहीं सुझा पाया।

पुस्तक के द्वितीय अध्याय में नेहरू की मृत्यु के पश्चात भारत की विदेश नीति में आये परिवर्तनों एवं उनके व्यापक परिणामों की तरफ ध्यान आकर्षित किया गया। नेहरू के उत्तराधिकारी के रूप में लालबहादुर शास्त्री को समस्यायें विरासत में मिली थी। 1965 में भारत–पाकिस्तान युद्व उन्ही समस्याओं का क्रमिक विकास था। शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व की भावना को ध्यान में रखकर विजयी भारत ने ताशकन्द समझौता किया परन्तु दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों में शास्त्रीजी का देहावसान हो गया।

शास्त्रीजी की उत्तराधिकारी इन्दिरा ने अपनी पारी की शुरुआत गुरु–निरपेक्षता के आन्दोलनों को गति प्रदान करने के साथ की। वाशिंगटन से प्राप्त हो रही लगातर निराशा एवं खाद्यान्न संकट भारतीय विदेश नीति के प्रभाव को बढ़ाने के मार्ग में एक बाँधा था। लिंडन जॉनसन के साथ उनके टकराव ने जवाहरलाल नेहरू की विदश नीति की याद दिला दी थी। सोवियत संघ के साथ टकराव भी भारतीय विदेश नीति का एक आयाम रहा।

इन्दिरा गाँधी ने अपने कार्यकाल में भारतीय विदेश नीति को अधिक स्पष्टता एवं आक्रामकता प्रदान की और मौजूदा अनाज संकट को दूर करने का प्रयास किया। विदेश नीति की असली परीक्षा बाग्लादेश की समस्या के रूप में सामने आयी। पूर्वी पाकिस्तान के विरूद्व पश्चिमी पाकिस्तान द्वारा किये जा रहे शोषण का ना केवल अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर विरोध किया गया अपितु युक्तिवाहिनी को नैतिक समर्थन प्रदान कर एक नवीन देश बांग्लादेश का निर्माण कराया गया। संधर्ष की परिणिति शिमला समझौते के रूप में हुई। यह वह दौर था जब भारत अमेरिका से सम्बन्धों को पुर्नमूल्यांकित कर रहा था। आन्तरिक असन्तुलन का प्रभाव भी आपातकाल के रूप में देखने को मिला। इस अवधि में भारत

के अपने पड़ोसियों के साथ सम्बन्ध सकारात्मक रहे।

यह वह समय था जब भारत का पड़ौस महाषक्तियों की प्रयोगषाला बन चुका था। अफगानिस्तान की तत्कालीन परिस्थिति भारत के लिए वाषिंगटन और मास्कों के साथ सम्बन्ध बनाये रखने की एक कठिन घड़ी थी। भारत ने यू०एस०एस०आर० के सैन्य हस्तक्षेप का विरोध किया और अमेरिका के साथ आर्थिक सम्बन्धों को सुदष्ढ़ भी किया। 'किसिंजर की निश्ठुर इन्दिरा'' के सामने एक संकट खड़ा हो गया जब चीन, पाकिस्तान और अमेरिका की एक युति बनने लगी। भारत ने 'पूरब की ओर देखो' की नीति का अनुसरण करने का प्रयास किया। साथ ही अपने छोटे पड़ौसी देषों के साथ ''बड़े भाई'' की भूमिका का भी निर्वहन किया।

तष्तीय अध्याय में इन्दिरा गाँधी की हत्या से उत्पन्न परिस्थितियों में सत्ता सम्भालने वाले उनके पुत्र राजीव गाँधी की विदेष नीति का विष्लेशण किया गया। पड़ोसियों के साथ सम्बन्ध में पाकिस्तान में हुए सत्ता परिवर्तन के पष्चात् बेनजीर भुट्टों की सरकार के साथ भी सम्बन्धों में खटास ही रही। श्रीलंका के साथ तमिल उग्रवादियों की समस्या के समाधान के रूप में राजीव–जयवर्धने समझौता एक महत्वपूर्ण पड़ाव था परन्तु इसकी परिणिति सुखद ना हो सकी। चीन के साथ इस कालखण्ड़ में रिष्तों में एक नई गरमाहट दिखाई दी और सीमा विवाद को आपसी सम्बन्धों में एक मात्र विवाद ना मानते हुए भारत–चीन ने आगे बढ़ने का प्रयास किया। महाषक्तियों के साथ भी भारत के सम्बन्ध लगातार सकारात्मक रूप से आगे बढ़ते रहे।

राजीव गाँधी ने संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ सम्बन्ध सुधारने का गम्भीर प्रयास किया। आर्थिक पक्ष को मजबूत करते हुए भारतीय हितों का अत्याधिक ध्यान रखना इस दौर की विदेष नीति की प्रमुखता रही। सोवियत संघ के साथ हमारे सम्बन्ध मित्रवत एवं जनचेतना में परिणित हो चुके थे। पाकिस्तान की पष्चिमी देषों द्वारा सहायता दिल्ली–मास्को सम्बन्धों की संजीवनी थी। यह युग परमाणु निःषस्त्रीकरण के विचार को विष्वपटल पर रखने की भारत की भूमिका को परिलक्षित करता है। गुटनिरपेक्षता को लेकर राजीव गांधी के प्रयास खासकर के आर्थिक सर्वसमावेषी सम्बन्ध सराहनीय रहे।

अघ्याय चार में राजीव गांधी के सत्ता से हटने के बाद गठबन्धन सरकारों के दौर की विदेष नीति का विष्लेशण किया गया है। षीतयुद्ध के अवसान के बाद उत्पन्न परिस्थितयों एवं खाड़ी युद्व प्रथम का प्रभाव भारतीय विदेष नीति पर स्पश्ट रूप से दिखाई देता है। पी.वी. नरसिम्हा राव की सरकार के द्वारा अर्थव्यवस्था को उदारीकरण की तरफ ले जाया गया, वही मध्य एषिया के संकट ने काफी हद तक भारत को प्रभावित भी किया। पाकिस्तान के साथ सम्बन्धों में कड़वाहट जारी रही, वही चीन के साथ सम्बन्ध धीरे–धीरे संवाद तक पहुँचने लगे। इसी क्रम में आई.के. गुजराल ने गुजराल–सिद्वान्त के माध्यम से भारतीय विदेष नीति के षान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के भाव को प्रदर्षित किया।

यह काल खण्ड़ षीतयुद्ध के पष्चात् सोवियत संघ के विद्यटन एवं रूस के अभ्युदय की पटकथा है। भारत और रूस् यू०एस०एस०आर० और भारत के सम्बन्धों से अलग अपने सम्बन्धों को नये आयाम दे रहे थे। यह समय सतर्क विदेष नीति, आर्थिक सम्बन्धों पर अधिक केन्द्रीयकरण एवं

पश्चिमी दबावों से जूझते दिखाई दे रहा था। समस्याओं का निराकरण और सम्बन्धों का सुदृढ़ीकरण भारत और रूस के लिये संजीवनी के समान था।

यह समय नव–स्वतन्त्र राष्ट्रों के उदय का समय था जिनके साथ सम्बन्ध स्थापित करना भारत के लिये चुनौतीपूर्ण था। धीरे–धीरे ही सही भारत ने कजाकिस्तान, तजाकिस्तान आदि राष्ट्रों के साथ ऊर्जामय पटकथा लिखी। लेखक के अनुसार पाकिस्तान–भारत के सम्बन्ध कमोवेश पूर्ववत ही रहे। बाबरी मास्जिद की घटना ने एवं चीन–पाकिस्तान की बढ़ती नजदीकियों ने दिल्ली और इस्लामाबाद के सम्बन्धों को प्रभावित किया।

अटल बिहारी वाजपेयी के दौर में भारत ने परमाणु परीक्षण कर अपनी शक्ति को बढ़ाया। वैश्विक प्रतिबन्धों के बाद भी इस अवधि में भारत अपने सम्बन्धों को नये आयाम प्रदान करता गया। पड़ोसियों के साथ शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व का प्रयास लाहौर बस यात्रा थी, परन्तु इसके परिणामस्वरूप पाकिस्तान ने कारगिल में धुसपैठ कर भारत को युद्व के मुंहाने पर खड़ा कर दिया तथा कंधार विमान अपहरण कांड ने भारत को झकझौर दिया था। यह समय भारत और अमेरिका के सम्बन्धों की एक नई शुरूआत के रूप में व्याख्ति किया गया है। 9/11 की घटना एवं संसद पर हुए आंतकी हमलों में भारत को आंतकवाद के विरूद्व अधिक मुखरता से विरोघ करते देखा गया। खाड़ी युद्व द्वितीय एंव उससे उत्पन्न परिस्थितियों का भारत द्वारा व्यापक विश्लेषण किया गया।

अध्याय पाँच में एन.डी.ए. की सरकार के पतन के पश्चात यू.पी.ए. सरकार के निर्माण एवं विदेश नीति में आये परिवर्तनों की व्याख्या की गयी है। मनमोहन सिंह की सरकार में जहाँ पडोसियों के साथ सम्बन्धों को बेहतर बनाने का प्रयास किया गया वहीं चीन के साथ आर्थिक पक्षों को ध्यान में रखते हुए सम्बन्धों को पुर्नव्याख्यापित किया गया। महाशक्तियों यथा रूस के साथ रक्षा क्षेत्र में लगातार सहयोग बढ़ा वहीं संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ परमाणु समझौता सम्पन्न हुआ। सम्बन्धों का आर्थिक पक्ष विदेश नीति की व्यापकता आसियान, जापान, द0 अमेरिकी महाद्वीप एवं अफ्रीकी महाद्वीप के सम्बन्धों के विस्तार के साथ दिखाई देती है।

इस काल में भारत आर्थिक क्षेत्र में अपने प्रभाव को बढ़ाने एवं वैश्विक सम्बन्धों में अपनी अक्षुण्ण विदेश नीति को संचालित करने का प्रयास करता है। पाकिस्तान के साथ आयी कटुता को दूर करने का प्रयास भी इस दौर में किया जाता है परन्तु सैन्य तानाशाह मशर्रफ गम्भीर नहीं दिखाई पड़े।

चीन विश्व की उत्पादन इकाई के रूप में उभर रहा था। माओ युग से आगे बढ़ते हुये चीन आर्थिक चालक की भूमिका निभा रहा था। यह दौर चीन के प्रधानमन्त्री एवं राष्ट्रपति की यात्रा के रूप में भी याद किया जाता है। सीमा विवाद का हल खोजने का प्रयास किया गया एवं एल०ओ०ए०सी० पर शान्ति की स्थापना की दिषा में सकारात्मक प्रयास किये गये। आर्थिक सम्बन्ध एक नए युग में प्रवेष करते हुए आगे बढ़ रहे थे।

रूस और भारत सम्बन्ध ''एक टिकाऊ रिश्ते'' में परिणत हो रहे थे। पुतिन–वाजपेयी की दिल्ली घोषणा 1971 की सन्धि का स्थान ले रही थी। भारत और रूस सैन्य, परमाणु ऊर्जा एवं आर्थिक सम्बन्धों की नयी रूपरेखा लिख रहे थे। भारत में सत्ता परिवर्तन के बाद भारत–अमेरिका

परमाणु समझौता एक युगान्तकारी परिवर्तन में परिलक्षित होता है। भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इस समझौते के लिये आगे बढ़ता है। अमेरिकी विद्वान टेलरस ने लिखा है कि अमेरिकी भू–राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये नई दिल्ली परम आवष्यक है।

भारत के पडोस में लगातार चुनौतियाँ खड़ी हो रही थी। नेपाल में राजपरिवार की हत्या के बाद उत्पन्न परिस्थितियों को नई दिल्ली द्वारा बखूबी सम्भाला गया। विदेश नीति को व्यापकता प्रदान करते हुए भारत ने आसियान, जापान एवं यूरोपीय–यूनियन के साथ सम्बन्धों को आगे बढ़ाया। भारत की उपस्थिति अफ्रीका में भी दिखाई देने लगी थी। खाड़ी देशों के साथ भी भारत ने ऊर्जा आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सम्बन्धों को नये आयाम दिये।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा शब्द–विन्यास एवं वाक्य–योजना का जो चयन किया गया है वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। अन्तर्राश्ट्रीय राजनीति में भारतीय भूमिका को समझाने में यह पुस्तक काफी हद तक सफल हुई है। पुस्तक के लेखक ने अपनी लेखनी से शीर्षक के साथ न्याय किया है। विषय को स्पष्ट करने के लिए लेखक के द्वारा वैचारिक निरपेक्षता का परिचय देते हुए हर पक्ष का पूर्ण विश्लेषण किया गया है। विषयवस्तु एवं अध्ययन सामग्री का संयोजक अत्यन्त प्रभावकारी है।

इस पुस्तक में अनेक अच्छाइयों के पष्चात् भी आलोचना की गुंजाइश रह जाती है। मूल पाठ अंग्रेजी में होने के कारण यह पुस्तक अनुवादित है। जिसके कारण भाषा की क्लिष्टता अध्ययन के प्रवाह को बाधित करती है। लेखक द्वारा विषयों को समझाने के लिए समस्या के ऐतिहासिक पक्ष पर कम प्रकाश डाला गया जैसे, तिब्बत की समस्या, भारत–चीन सीमा विवाद, तमिल समस्या आदि की इतिहास की व्याख्या करने से विषयगत स्पष्टता बढती परन्तु इसका सीमित प्रयोग किया गया।

इस पुस्तक की भाषा (अनुवादित) सामान्य एवं सरल शब्दों में की जा सकती है, जिससे कि इस पुस्तक का क्षैतिज प्रसार बढ़ सके साथ ही ऐतिहासिक सन्दर्भों का अधिक प्रयोग किया जा सकता है। जिससे कि पाठकों को विदेष नीतियों के साथ तारतम्य स्थापित करने में आसानी हो सके। पुस्तक में भविष्य की समझ बनाने के लिए लेखक द्वारा कुछ विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक आंकलन प्रस्तुत किये जा सकते है। इस पुस्तक को प्रत्येक वर्ष नये संस्करण के साथ वैश्विक परिवर्तनों को समाहित करते हुए प्रकाशित किया जा सकता है जिससे कि राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों को भारतीय विदेश नीति को समझने एवं अद्यतन रहने में सहायता मिल सकें।

यह पुस्तक हिन्दी माध्यम के राजनीति विज्ञान के विद्यार्थियों हेतु अत्यन्त ही उपयोगी है। विशयगत स्पष्टता एवं तार्किक विश्लेषण से इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। पुस्तक में लेखन के लगभग सभी मानकों का यथोचित प्रयोग किया गया, पुस्तक विदेश नीति को समझने एवं स्पष्ट दृष्टिकोण विकसित करने में उपयोगी सि़द्व हो सकती है।